VOL- IX | ISSUE- XII | DECEMBER | 2022 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.331 | ISSN 2349-638x

आधुनिकता : कालबोधक या प्रवृत्तिबोधक

डॉ. गोपीराम शर्मा
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय
महाविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.)–३३५००१

शोधसार **(Abstract)** –

आधुनिकता को बहुत से विद्वान काल से जुड़ी धारणा मानते हैं। मध्यकाल के बाद समाज जीवन में विज्ञानवाद, बौद्धिकता, गैर रोमांसवाद, प्रबोधनवाद आदि कारणों से जो क्रांति आई, उसे आधुनिकता कहते हैं। यह एक काल से सम्बंध रहती है। इसके प्रत्युत दूसरी तरफ विद्वान मानते हैं कि आधुनिक भले ही वर्तमान से जुड़ी हो पर वह वर्तमान की सभी चीजों को ग्रहण नहीं करती। जो चीजें, प्रवृत्तियाँ शाश्वत होती हैं, आधुनिकता उन्हें लेकर आगे बढ़ जाती है। अत: हर काल की जीवंत वृत्तियां आधनिकता का हिस्सा है। आधुनिकता काल से नहीं, प्रवृत्तियों से सम्बंधित है। पर विचार करने पर पाते हैं कि आधुनिकता हमेशा वर्तमान काल से अधिक जुड़ी रहती है। अतीत की प्रवृत्तियाँ उसमें कम होती हैं, उसका ध्यान वर्तमान पर सबसे अधिक रहता है अत: 'काल' तत्त्व भी महत्त्वपूर्ण है। कह सकते हैं कि आधुनिकता काल को नहीं, काल की गति से संबंधित है।

बीजशब्द ;ज्ञमलूवतकेद्ध –

आधुनिकता, काल, समसामयिक, वर्तमान काल, अतीत, परिवर्तन, मानसिकता, ज्ञानोदय, प्रबोधन, परिवेश, मूल्य, मध्यकालीन, मनुष्य, ग्राम आधारित, मशीनीकरण, सापेक्ष, प्रासंगिक, क्रियाशील, कारित, चेतना, पहल, ठहराव, निरन्तरता, आधुनिकीकरण।

उद्देश्य **(Objectives)**

आधुनिकता, आधुनिकता बोध और आधुनिकीकरण जैसे प्रत्ययों को प्राय: एक ही मान लिया जाता है, जबकि इन तीनों में पर्याप्त अन्तर है। इसके साथ आधुनिकता को आधुनिक काल अर्थात् काल से जोड़कर देखा जाता है। इसके विपरीत मत रखने वाले इसको एक प्रवृत्ति या बोध सिद्ध करने में लग जाते हैं। इसलिए यह जरूरी हो जाता है कि यह जाना जाए कि आधुनिकता का सम्बंध काल से है या प्रवृत्ति से या बोध से? इस शोध में इस तथ्य को स्पष्टता से समझा गया है। इसलिए यह शोध अपने उद्देश्य में पूर्णतया सफल होता है।

शोध प्रविधि **(Methodology)** –

इस शोधकार्य को करने के लिए सभी आवश्यक तथ्य और आँकड़ें द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त किए हैं। द्वितीयक स्रोतों के अन्तर्गत साहित्यिक एवं आलोचनात्मक ग्रंथों को आधार बनाया गया है। इन ग्रंथों के अध्ययन–विश्लेषण से सूचनाएं एकत्र कर आगमन–निगमन विधियों से संश्लेषित–विश्लेषित किया, तदूपरांत सापेक्षवादी ज्ञान मीमांसा पद्धति द्वारा अंतिम निष्कर्ष निकाल कर शोध हेतु उपयोग में लिए गए हैं।

विषय उपस्थापन –

आधुनिकता को केवल काल सम्बद्ध कर देखा जाता है। आधुनिक होना समसामयिक तथ्य समझ लिया गया है, परन्तु आधुनिकता कालगत होते हुए केवल काल से सम्बंधित नहीं है। यह एक रचनात्मक स्थिति है जिसमें परिवर्तन का दर्शन है। परिस्थितियों के बदलने के साथ बदली परिस्थितियों के साथ अनुकूलन करने की मानसिकता को ही आधनिकता कहते हैं।

भारत में हम १८५७ की क्रांति से ही आधुनिकता का प्रारम्भ मानते हैं तो प्रश्न उठता है कि १५० वर्ष पुराना समय क्या आज भी आधुनिक कहलाएगा? और यदि १८५० या १८५७ ई. में हम आधुनिक काल में प्रविष्ट हुए थे तो अब हम कौन से

काल में चल रहे हैं तथा आगे का समय क्या कहलाएगा? क्या इस समय को उत्तर–आधुनिक कहें? इस प्रकार के प्रश्न आधुनिक काल और आधुनिकता से सम्बंधित उठाए जाते रहे हैं।

आधुनिकता विश्व में ज्ञानोदय आंदोलन या प्रबोधन परियोजना से निकली है। यह एक प्रवृत्ति या जीवन दर्शन है जिसमें विज्ञानवाद, टेक्नोलॉजी और मिथकों को छोड़कर 'मनुष्य' की पूर्ण प्रतिष्ठा है। आधुनिकता में अपने परिवेश के प्रति जीवन दृष्टि अधिक प्रभावित है, अपने वर्तमान के प्रति अधिक सजगता होती है।

यह प्रश्न महत्त्वपूर्ण है कि आधुनिकता में 'काल' तत्त्व कोई भूमिका रखता है या केवल 'जीवन दृष्टि' महत्त्वपूर्ण है। पहले तो इसे जीवन दृष्टि के रूप में ही देखना विद्वानों को अधिक रुचा है। रमेश कुंतल मेघ इस विषय में लिखते हैं – "आधुनिकता एक प्रक्रिया है, जिसमें मूल्य बनते मिटते रहते हैं। इसमें मूल्यहीनता नहीं रहती। आधुनिकता बंधी – बंधाई लीक को तोड़ देती है। हर मूल्य पर प्रश्नचिह्न लगाती चलती है। आधुनिकता को एक मूल्य के रूप में आंकने के बजाय एक प्रक्रिया के रूप में पहचाना जाए।"[१]

देवेन्द्र इस्सर लिखते हैं – "आधुनिकता एक विद्रोह और नवीनता का आंदोलन थी .... आधुनिकता परम्परा भंजक है। आधुनिकता नवचिंतन तथा नवीन शैली है।"[२]

इसी प्रकार की बात उर्मिला मिश्र ने कही है – "आधुनिकता एक तरह की रचनात्मक स्थिति है जिसका अपना दर्शन है और जिसकी अपनी निजी वैचारिकता है। मनुष्य के आत्म साक्षात्कार के क्रम में स्वतंत्र होकर जिस दर्शन का प्रत्यक्षीकरण किया है उसे ही मिले–जुले रूप में आधुनिकता कहा जाता है।"[३]

ऐसी परिभाषाओं से यही निकल कर आता है कि आधुनिकता एक विचारधारा, जीवन दृष्टि या कोई सम्प्रत्यय है। मध्यकाल में यूरोप में बौद्धिकता के आगमन से ही आधुनिकता का प्रारम्भ होता है। एक प्रकार से आधुनिकता मध्यकाल के सभी लक्षणों–विशेषताओं को परिवर्तित करती है। मध्यकालीन मनुष्य समाज केन्द्रित रहा, जबकि आधुनिक काल में 'व्यक्ति केन्द्रित'। मध्यकालीन समाज में धर्म व विश्वास की प्रधानता थी वहीं इस काल में मनुष्य ने विज्ञान और तर्क को अपनाया। मध्यकालीन सभ्यता ग्राम आधारित थी, आधुनिक काल में नगरीकरण को बढ़ावा मिला। आधुनिक काल में कृषि, पशुपालन के स्थान पर औद्योगिकीकरण–मशीनीकरण को प्रमुखता मिली। क्षेत्रीयता की जगह राष्ट्रवाद–राष्ट्रीयता जैसे तत्त्व उभरे।

इन्हीं सामूहिक लक्षणों का नाम आधुनिकता है। इसी बात को डॉ. नगेन्द्र इस प्रकार कहते हैं – "आधुनिकता मध्ययुगीन जीवन दर्शन से भिन्न एक नया जीवन दर्शन है।"[४]

बहुत से विद्वान मानते हैं कि आधुनिकता काल से जुड़ी नहीं हो सकती। क्योंकि हर काल में आधुनिक और गैर आधुनिक दोनों प्रकार के लोगों की सदा उपस्थिति रहेगी। जिस काल को आधुनिक कहेंगे, उस काल में भी अ–आधुनिक या गैर आधुनिक तो लोग रहेंगे ही। अत: इसे एक दृष्टि या बोध के रूप में मानना चाहिए जो व्यक्तियों को नए मूल्यों के प्रति सचेत करती है।

दूसरी ओर विद्वान आधुनिकता को काल से सम्बद्ध करके भी देखते हैं। आधुनिकता से जुड़ा मूल शब्द 'अधुना' वर्तमान का अर्थ द्योतित करता है। आधुनिकता का सम्बंध यदि किसी काल से सर्वाधिक होता है तो वह वर्तमान होता है। जो आज गतिशील है, सारे पुराने मार्गों व बंधनों को छोड़कर आया वर्तमान। आधुनिकता इसी समय से अधिक सापेक्ष है, पर जो आज आधुनिक है उसे भी कल बदल जाना है अर्थात् वर्तमान या तो अतीत हो जाएगा या भविष्य की ओर बढ़ जाएगा। वर्तमान सदा वर्तमान नहीं रहता। वर्तमान के बदल जाने के बाद वर्तमान की वे प्रवृत्तियाँ, जो समय के बीतने पर अप्रासंगिक होंगी, वे परम्परा और रूढ़ि में ढल जाएंगी। इस प्रकार आधुनिकता में वे जो प्रवृत्तियां छनकर, छंट कर शामिल होंगी, वे वर्तमान की ही होंगी। जैसे पिछले वर्तमान से अगला वर्तमान आता जाएगा उसकी उपयोगी, प्रगतिशील, प्रासंगिक, क्रियाशील प्रवृत्तियाँ आधुनिकता का भाग बनेंगी। यहां यह चिंतनीय है कि आधुनिकता चेतना से जुड़ी होती है। बीते समय के चेतन तत्त्व उसमें होते हैं। परन्तु जब भी इतिहास में तथ्य और घटनाएं कारित होते हैं तो वे समसामयिक विचारों और वृत्तियों के चलन का बोध कराती हैं। इन्हीं वृत्तियों और विचारों में द्वंद्व के पश्चात् ही विचारक, लेखक और साहित्यकार शाश्वत मूल्यों को आधुनिकता

के रूप में ग्रहण करते हैं। इस प्रकार आधुनिकता वर्तमान से अधिक सम्बंधित रहती है।

आधुनिकता इतिहास का गतिशील हिस्सा शेयर कर लेती है। "आधुनिकता का एक पहलू वह है जो बीते हुए से 'शेयर' करता है और दूसरा वह जो उसकी अपनी देन है।"[५] आधुनिकता एक प्रक्रिया है उसका परिणाम होता है आधुनिकता बोध। आधुनिकता के द्वारा जब मूल्यों की स्थापना होने लगे तो उस कार्य को आधुनिकता बोध कहेंगे। पारिवारिक, वैवाहिक, सामाजिक सम्बंधों में बदलाव दिखाई देना आधुनिकता बोध है। उदाहरण के लिए जैसे मध्यकाल के बाद आधुनिकता आई तो व्यक्ति व समाज जीवन में उसके प्रभाव लक्षित हुए और हम धोती–कुर्ता छोड़कर पेंट–शर्ट पहनने लगे। लड़कियों के पढ़ाने के लिए स्कूल–कॉलेज खोले गए। ये आधुनिकता बोध कहलाएंगे। यहां पर समझना आवश्यक है कि आधुनिकता निरन्तर विकास की प्रक्रिया है तो आधुनिक बोध उसका चित्र है, इतिहास है एवं परिणाम है। आधुनिकता में एक अविराम गतिशीलता है और आधुनिक बोध में ठहराव। जैसे उपर्युक्त उदाहरण में पेंट–शर्ट के बाद हम जींस–टी शर्ट पहनने लगे, टाई वगैरह लगाना बंद कर दी। जो स्कूल–कॉलेज सिर्फ लड़कियों के होते थे, अब लड़कियां सहशिक्षा में ज्यादा सुविधाजनक होने लगी। ये तमाम परिवर्तन भी आधुनिकता के कारण ही हैं और नए आधुनिकता बोध कहलाएंगे। यहां देखने वाली बात है कि उसी आधुनिकता के अन्तर्गत ही आधुनिक बोधों में परिवर्तन आ गया है। डॉ. चन्द्रशेखर के अनुसार – "आधुनिक बोध में एक सापेक्ष ठहराव है, आधुनिकता में प्रश्नशीलता की निरन्तरता है। इसलिए एक युग का आधुनिक बोध आगामी युग में स्वीकृति नहीं पाता है।"[६] आधुनिक बोध में अपने देशकाल, युग और इतिहास के प्रति जागरण का भाव है, इसे युगीन संदर्भ में देखा जाता है।

इसी प्रकार आधुनिकता से जुड़ा एक और प्रत्यय है– आधुनिकीकरण। आधुनिकता बोध जहां आधुनिकता के फलस्वरूप आया सूक्ष्म परिणाम है, आन्तरिक फलन है, जबकि आधुनिकीकरण एक स्थूल परिणाम है, बाह्य फलन है। आधुनिकीकरण ऐसी वृत्ति जिसमें व्यक्ति नवीनता को वरेण्य मानकर उसे व्यवहार के विभिन्न रूपों में ढालने लगता है। वेशभूषा, खान–पान, रहन–सहन, बातचीत आदि व्यवहारों में प्रतिशीलता को लेकर जो बदलाव उत्पन्न हो जाते हैं, वे आधुनिकीकरण के अन्तर्गत आते हैं। डॉ. रमेश कुंतल मेघ लिखते हैं – "आधुनिकीकरण बहिर्गत अवस्थाओं (ऑब्जेक्टिव कंडीशन्स) तथा आधुनिकता अन्तर्मुखी संकल्पों (सब्जेक्टिव विश) के आविर्भावक है।"[७] आधुनिकीकरण एक नवीनीकरण के फलस्वरूप आधुनिकीकरण दिखाई देता है, इसके प्रत्युत कुछ ऐसे विद्वान हैं जो मानते हैं कि आधुनिकीकरण के प्रसार के कारण ही आधुनिकता आती है। "जीवन की जटिलता और समय से टकराहट के क्रम में आधुनिकीकरण होता है। आधुनिकीकरण ही रूपान्तरित होकर आधुनिकता बन जाता है।"[८]

निष्कर्ष –

उपर्युक्त विवेचन से यह निकल कर आया है कि आधुनिकता एक काल विशेष से सम्बंधित होते हुए भी उसमें वर्तमान काल बोध के साथ पूर्ववर्ती युगों की जीवंत चेतना भी शामिल है। आधुनिकता एक मानसिक स्थिति है जो मूल्यों का विश्लेषण करती है। समयोपयोगी मूल्य स्वीकार कर लिए जाते हैं और शेष को छोड़ दिया जाता है। इस प्रकार आधुनिकता किसी काल की नहीं, काल की गति को इंगित करती है।

सन्दर्भ –

१. रमेश कुंतल मेघ, आधुनिकता बोध और आधुनिकीकरण, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली, १९६९ ई. पृ. ४१
२. देवेन्द्र इस्सर, उत्तर आधुनिकता : साहित्य और संस्कृति की नई सोच, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, पृ. ३९
३. डॉ. उर्मिला मिश्र, आधुनिकता और मोहन राकेश, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, १९७९ ई., पृ. ०१
४. डॉ. नगेन्द्र, एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका, १–१९वीं सदी, पृ. १०८६
५. विपिन कुमार अग्रवाल, आधुनिकता के पहलू, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, २००२ ई., पृ. १७

६. डॉ. चन्द्रशेखर, समकालीन हिन्दी नाटक : कथ्य चेतना, आत्माराम एंड संस, दिल्ली, १९८२ ई., पृ. ०१
७. डॉ. रमेश कुंतल मेघ, आधुनिक बोध और आधुनिकीकरण, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली, १९६९ ई., पृ. १३५
८. डॉ. उर्मिला मिश्र, आधुनिकता और मोहन राकेश, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, १९७९ ई., पृ. ०४

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com